International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 27-06-2021, Accepted: 12-07-2021, Published: 28-07-2021
Volume 7, Issue 4, 2021, Page No. 152-153

'प्रकृति के सुकुमार कवि': सुमित्रानंदन पंत

अर्चना शर्मा
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग, रामजस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध–आलेख का ध्येय 'प्रकृति के सुकुमार कवि' सुमित्रानंदन पंत के काव्य में निरूपित प्रकृति पर प्रकाश डालना रहा है । शोध–आलेख के माध्यम से पंत के जीवनः व्यक्तित्व और कृतित्व को शब्दों के माध्यम से रेखांकित करने का प्रयास किया गया है । शोध– आलेख के माध्यम से सुमित्रानंदन पंत के काव्य में चित्रित प्रकृति के विविध आयामों को सोदाहरण विवेचित किया गया है।

मूल शब्दः प्रकृति, छायावाद, सामंजस्य, पंचतत्व, स्वच्छंदतावादी काव्य, आधुनिक काल

प्रस्तावना
'प्रकृति के चितेरे कवि' सुमित्रानंद पंत का काव्य प्रकृति–वर्णन का कालजयी दस्तावेज़ है। स्वयं सुमित्रानंदन पंत आधुनिक हिंदी छायावादी कविता के श्रेष्ठ प्रतिनिधि कवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं। यदि ग़ौर करें तो छायावादी चार प्रमुख आधार–स्तंभ कवियों के मध्य सुमित्रानंदन पंत का रचनाकाल सर्वाधिक विस्तृत (6 दशक) माना जाता है। जीवन–प्रकृति–मनुष्य का जैसा सामंजस्य–सूत्र पंत के काव्य में प्राप्त होता है। वह अन्यत्र दुर्लभ है।
20 मई 1900 को कौसानी (अल्मोड़ा/उत्तराखंड) की गोद में जन्में सुमित्रानंदन पंत की माता सरस्वती देवी व पिता गंगादत्त पंत थे। माता सरस्वती देवी ने पुत्र 'पंत' को मूर्च्छितावस्था में जन्म दिया और स्वयं पंचतत्व में विलीन हो गयीं। शायद यह कारण भी रहा कि पंत को महाशक्ति ने 'प्रकृति–पुत्र' के रूप में ख्याति प्रदान की।
पंत बाल्यकाल की त्रासदी का वर्णन कर लिखते हैं–

"मातृचेतना शिशु को दे प्राणों का संबल।
अर्न्तहित जब हुई, भाग्य–छल कहिये विधि बल।।"

मेरा मानना है कि माँ स्वरूप प्रकृति प्रत्येक चर–अचर की पुकार को अवश्य महसूस किया करती है। यह कारण भी था कि इस दृश्य से व्याकुल हो कौसानी की ममतामयी प्रकृति ने पंत को अपने विशाल स्नेहिल अंक का प्रश्रय प्रदान कर दिया।
आज सुमित्रानंदन पंत का समग्र कृतित्व स्पष्टतः साक्ष्य प्रस्तुत करता है कि प्रकृति ही, माता–पिता, बहन, सखा, शिक्षक, प्रेमिका, सर्वस्व बनकर सम्मुख आयी है।
सर्वविदित है कि प्राचीन काल से ही कवि प्रकृति के प्रति आकृष्ट रहे हैं। आख्यानों और उपनिषदों में यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से प्रकृति–चित्रण नहीं हुआ है परंतु प्रकृति की उपस्थिति का अनुमान सदैव होता ही है।
छायावादी कवियों ने प्रकृति को अपना आत्मीय माना एवं उससे सौहार्दपूर्ण सबंध स्थापित किया है। काल के काव्य में प्रकृति का स्थान सर्वोपरि है। जयशंकर प्रसाद ने प्रकृति को ईश्वर की अनुपम भेंट के रूप में स्थान दिया है –

"चिर मीलित प्रकृति से पुलकित
वह चेतन पुरुष पुरातन
निज शक्ति तारंगाथित था
आनंद अँबुनिधि शोभन"

पंत की रचनाओं में प्रकृति और मानव एक–दूसरे के पर्याय हैं। डॉ० प्रेमशंकर "हिंदी स्वच्छंदतावादी काव्य" पुस्तक में लिखते हैं –

"पंत को हिंदी स्वच्छंदतावादी काव्य के तीन मुख्य हस्ताक्षरों में सम्मिलित किया गया है। उन्होंने लंबी यात्रा की है और अनेक काव्य आंदोलनों को देखने का अवसर उन्हें मिला है। वे अपने अछूते प्राकृतिक सौंदर्य के लिए विख्यात हैं और जिसने उनकी आरंभिक कविताओं के आधार पर उन्हें "प्रकृति का कवि" कहलाने का गौरव दिया।"[2]

यह कौशल कालिदास और भवभूति की परंपरा का आशीर्वाद है। रामायण, मेघदूत, ऋतुसंहार, रघुवंश, उत्तररामचरित, अभिज्ञानशाकुंतलम्, आदि संस्कृत काव्यों एवं नाटकों में भी प्रकृति का भव्य हृदयग्राही वर्णन प्राप्त होता है। कालिदास का 'मेघदूत' तो प्रकृति के रमणीय आँगन की सैर है। भवभूति के काव्य में भी ऐसा ही अनुपम सौंदर्य है। परवर्ती संस्कृत साहित्य में कालिदास और भवभूति सम प्रकृति चित्रण दुर्लभ ही है।
हिंदी साहित्य में आदिकाल तथा रीतिकाल के दौरान प्रकृति का प्रयोग प्रायः उद्दीपन एवं अलंकरण हेतु अधिक किया गया है। कतिपय अनेक कवियों ने आलंबनगत चित्र भी अंकित किए हैं, फिर भी आधुनिक से पूर्व प्रकृति का मनोरम रूप दर्शनीय अवश्य है। मैथिल कोकिल विद्यापति ने उद्दीपन और अलंकरण हेतु प्रकृति की छटा को व्याख्यायित किया–

"नाचए जुवति जना हरखित मना जनमल बाल बधाई है।
मधुर, महारस मंगल गाएव मानिनि मान उड़ाई है।"[3]

भक्तिकालीन संत काव्य में जगत् और प्रकृति को शक्ति स्वरूपा मान उसकी वंदना की गयी है। सेनापति अवश्य

इस शृंखला में विशिष्ट पहचान रखते हैं। डॉ० खण्डेलवाल के अनुसार–
'रीतिकाल के कवियों में सेनापति एक ऐसे कवि हैं जिनकी आँख प्रकृति के प्रति बहुत सजग दिखाई पड़ती है। सेनापति के संदर्भ में कहा गया है –

"रितु वर्णन अद्भुत कियौ सेनापति कविराज।
एकै रचना नाम कौ तब सुकवि समाज।।"[4]

आधुनिक काल में भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद युग, हालावाद से अद्यतन प्रकृति वर्णन का स्वच्छंद प्रयोग दर्शनीय है।
सुमित्रानंदन पंत साहित्य के उन दुर्लभ आधुनिक कवियों में स्थान रखते हैं जिन्होंने प्रकृति को शिक्षिका के रूप में वर्णित किया है। पंत प्रकृति की दिव्य शिक्षण शक्ति से प्रेरित होकर संगीत शिक्षा हेतु मधुप–कलिका से प्रार्थना करते हैं –

"सिखा दो ना हे मधुपकुमारि
मुझे भी अपने मीठे गान।"

कभी–कभी पंत प्रकृति में रहस्य दर्शन की परंपरा का निदर्शन करते नज़र आ जाते हैं। 'नौका विहार' तथा 'एक तारा' आदि कविताएँ दृष्टांत स्वरूप प्रस्तुत हैं –

"हे जगजीवन के कर्णधार
चिर जन्म मरण के आर–पार,
शाश्वत जीवन नौका–विहार।"[5]

सुप्रसिद्ध कवयित्री महादेवी वर्मा ने 'पथ के साथी' में पंत से संबंधित संस्मरण लिखते हुए अपनी एक भूल के संदर्भ में लिखा, जब वह पंत को आरंभिक संप्रेषण के दौरान नारी समझ बैठी थीं। पंत ने स्वयं लिखा भी है –
'प्रकृति के साहचर्य ने जहाँ मुझे सौंदर्य, स्वप्न और कल्पनाजीवी बनाया, वहाँ दूसरी ओर वनभीरू भी बना दिया।'
निश्चित ही पंत को 'सुकुमार' और 'कोमल' कवि कहना युक्तिसंगत ही जान पड़ता है। मेरे मतानुसार कोमल कवि वह है जो जीवन की कटुताओं एवं संघर्षों से सहज ही जूझने की क्षमता रखता हो और धैर्य तथा विवेक का साथ न छोड़े।
सुमित्रानंदन पंत अपने जीवन–पथ की अनेक यात्राएँ पार कर लेने के उपरांत 'उत्तरा' की कविता में लिखते हैं–

"मैं स्वप्नों का प्रेमी मुझको
करता न सत्य जग मोहित।"

स्वयं पंत के शब्दों में – 'प्रकृति को मैंने अपने से अलग सजीव रहने वाली नारी के रूप में देखा है।'

'उस फैली हरियाली में
कौन अकेली खेल रही माँ।'

वह कहते थे कि जब–जब मैंने प्रकृति में तादात्म्य का अनुभव किया है, तब–तब मैंने अपने को भी नारी रूप में अंकित किया है।

निष्कर्ष

अस्तु; आधुनिक हिंदी साहित्य में 'छायावाद' को लेकर वैचारिक मुठभेड़ के मध्य 'प्रकृति वर्णन' को साथ लेकर अग्रसरित होने वाला कवि सुमित्रानंदन पंत 'पल्लव', 'गुंजन', 'ग्राम्या' सम काव्यों के आधार पर निश्चित ही प्रकृति का कुशल चितेरा' एवं प्रकृति के पथ का साथी सिद्ध होता है।

संदर्भ सूची

1. कामायनीः जयशंकर प्रसादः संस्करण 2007ः वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ–124
2. हिंदी स्वच्छंदतावादी काव्यः डॉ० प्रेमशंकरः संस्करणः 1974ः मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृष्ठ–290
3. प्राचीन काव्यः डॉ० संजीव कुमार जैनः संस्करणः 2013ः कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल, पृष्ठ–40
4. हिंदी साहित्य का प्राचीन इतिहासः डॉ० राजेश श्रीवास्तवः संस्करणः 2014ः कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल, पृष्ठ–270
5. आधुनिक काव्यः पंत से मुक्तिबोध तक युग एवं प्रवृत्तियाँः डॉ० संजीव कुमार जैनः संस्करणः 2025ः कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल, पृष्ठ–16